लेखकों व साहित्यकारों के नाम रहा 'युवा साहिती सत्र'

वरिष्ठों से युवा साहित्यकारों ने सीखी साहित्य रचना की वारीकी

- साहित्योत्सव में विभिन्न भाषाओं की साहित्य पर आधारित फिल्मों और सिनेमा पर हुई गहन चर्चा
- युवा कवियों ने असमिया, बोडो, कन्नड़, मराठी, संस्कृत, तेलुगु, भाषा में कविता पाठ किया

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: साहित्योत्सव के तीसरे दिन 22 सत्रों का आयोजन हुआ। इस दौरान छह सभागारों में विभिन्न विषयों पर वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत करने के साथ ही चर्चा की। साहित्य उत्सव में भारतीय ऐतिहासिक कथा साहित्य, दिल की आवाज विषय पर हिंदी कवि सम्मेलन और युवा साहिती सत्र पूरी तरह युवा लेखकों, साहित्यकारों और कवियों के नाम रहा।

नर्मदा सभागार में अभिनेता अतुल तिवारी की अध्यक्षता में स्याही से दृश्य तक सिनेमा विषय पर आयोजित सत्र में वक्ताओं ने अपने विचार रखे। दक्षिण भारत के सिनेमा के बारे में फिल्म समीक्षक रेखा जयदेव ने कहा कि मलयालम फिल्में साहित्य पर ही केंद्रित रही हैं। यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है कि जब-जब बहुत से निर्देशकों पर आर्थिक संकट आए हैं, उन्होंने उसकी भरपाई साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाकर की है। पर्यटन मंत्रालय में पर्यटन महानिदेशक मुग्धा सिन्हा ने कहा कि उत्तर और मध्य भारत की फिल्मों के लिए तकनीकी सुविधा केवल मुंबई केंद्रित होने के कारण भी क्षेत्रीय सिनेमा का निर्माण बाधित हो जाता है।

फिल्म समीक्षक मुर्तजा अली खान ने फिल्मों के अच्छे और खराब पहलुओं के बारे में बताया, जबकि अभिनेता अतुल तिवारी ने कहा कि सिनेमा बहुत सी कलाओं का समूह है और उसे साहित्य की तथा साहित्य को सिनेमा की हमेशा जरूरत रहेगी।

अच्छी फिल्म का निर्माण भी एक अच्छे उपन्यास लिखने की तरह है। वहीं दूसरी ओर मेघदूत मुक्ताकाशी रंगशाला में प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक उपमन्यु चटर्जी ने ध्यान देने योग्य कुछ बातें विषय पर व्याख्यान सत्र में देशभर से आए लेखकों, साहित्यकारों और कवियों विभिन्न विषयों की बारीकियों को बताया। जबकि, नर्मदा सभागार में वैश्विक साहित्यिक परिदृश्य में भारतीय साहित्य विषय पर शिक्षाविद हरीश त्रिवेदी की अध्यक्षता में लेखिका अरुंधति सुब्रमण्यम, कविता शर्मा, संपादक व अनुवादक निर्मल कांति भट्टाचार्जी, लेखक निखत जैदी सहित अन्य लेखकों ने जोर देकर कहा कि भारत का साहित्य वैश्विक पटल पर चमत्कृत करने वाला है।

इसके अलावा गोदावरी सभागार में आयोजित होने वाले सभी सत्र युवा लेखक, कवि और साहित्यकारों के नाम रहा। इस सभागार में विभिन्न विषयों पर सत्र का आयोजन किया गया। युवा कवियों ने असमिया, बोडो, कन्नड़, मराठी, संस्कृत, संताली, तेलुगु, और उर्दू भाषा में कविता पाठ किया। इसके अलावा कहानीकार शिव कुमार राम ने हिंदी, हेमंत अय्या ने कोंकणी, गुरमीत आरिफ ने पंजाबी में और जयेश शर्मा ने सिंधी भाषा में कहानी सुनाई।

रवींद्र भवन में स्याही से दृश्य तक विषय पर विचार रखते बाएं से फिल्म अभिनेता अतुल तिवारी, मुर्तजा अली खान, मुग्धा सिंह, नीलिमा दास, रेखा जयदेव ● सौ. अकादमी

सामाजिक भेदभाव ही वह पहली सीढ़ी

लेखक सम्मेलन में शनिवार को साहित्योत्सव में पुरस्कृत हुए रचनाकारों ने अपनी सृजन की रचना प्रक्रिया को पाठकों के साथ साझा किया। इस दौरान 22 लेखकों ने एक स्वर में कहा कि सामाजिक भेदभाव ही वह पहली सीढ़ी थी। जिसने सभी को लेखक बनने के लिए प्रेरित किया। हिंदी कविता संग्रह के लिए पुरस्कृत गगन गिल ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि कवि के लिए न तो कविता लिखना आसान है न ही कवि बने रहना। इसके लिए हर रोज संघर्ष करना पड़ता है। जो सभी लेखकों, कवियों और साहित्यकारों के लिए आसान नहीं है।

'भाषा को राजनीति का मोहरा न बनाया जाए'

रवि ठाकुर ● जागरण

नई दिल्ली : भाषा, मन की अभिव्यक्ति है, इसे राजनीति का मोहरा नहीं बनाया जाना चाहिए। यह भावना, साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव में तमिलनाडु और तेलंगाना राज्य के साथ ही दक्षिण के राज्यों से आए साहित्यकारों ने हिंदी-तमिल भाषा को लेकर चल रहे विवाद पर रखी। कहा, हिंदी, तमिल, तेलुगु व मलयालम जैसी भाषाएं, देश की आत्मा हैं। भाषाओं को राजनीति से अलग रखा जाना चाहिए और उन्हें एकता सेतु के रूप में देखा जाना चाहिए। भाषा विशेष पर आग्रह की जगह उन्हें स्वेच्छा अनुसार, लोगों को अपनाने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।

हाल ही में तमिलनाडु में तमिल-हिंदी भाषा को लेकर उपजा विवाद साहित्योत्सव में साहित्यकारों के बीच चर्चा में रहा। उत्सव के दूसरे दिन विभिन्न राज्यों से आए साहित्यकारों का जब जुटान हुआ तब भाषा और संस्कृति पर विमर्श शुरू हुआ। साहित्यकारों ने कहा कि भाषा की स्वतंत्रता हर नागरिक का अधिकार है और इसे राजनीति का उपकरण बनाने की जगह सांस्कृतिक संवाद के माध्यम के रूप में देखा जाना चाहिए। उत्सव में आए हिंदी और तमिल साहित्यकारों ने कहा कि वह किसी भाषा के विरोध में नहीं हैं। सभी भाषाओं का अपना महत्व है। भाषाएं लोगों को जोड़ती हैं, तोड़ती नहीं। साहित्य उत्सव में साहित्यकारों ने कहा कि लोग जरूरतों और रुचि के अनुसार भाषा सीख और बोल रहे हैं।

ललित कला अकादमी में साहित्योत्सव के दौरान परिसर में बनाई गई लाइब्रेरी में पुस्तकों का अवलोकन करते लोग ● जागरण

"भाषाएं, राजनीतिक कारणों से किसी पर थोपी नहीं जानी चाहिए। हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ जैसी भाषाओं का अपना समृद्ध साहित्य और संस्कृति है। जो जिसे सीखना चाहे सीखे। यह स्वैच्छिक होना चाहिए, न कि बाध्यकारी।
– ज्योति, हिंदी लेखिका-हैदराबाद

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का महान देश है। भाषा के माध्यम से ही संवाद और एकता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, न कि इसे बांटने का माध्यम बनाना चाहिए। भाषा को उन्नत बनाने पर ध्यान होना चाहिए।
– एन शिवानेशन, लेखक- चेन्नई

भाषा के नाम पर भेदभाव और राजनीति चिंताजनक है, जिसका कोई भी लेखक या साहित्यकार समर्थन नहीं करता है। साहित्य और कला का उद्देश्य लोगों को एक सूत्र में पिरोने का सबसे मजबूत तार है। – गिरिजा कुमार, प्रांत संपादक- तमिलनाडु

सभी को अपनी भाषा में सोचने और लिखने का अधिकार देना चाहिए, क्योंकि यह उनकी रचनात्मकता और सांस्कृतिक जुड़ाव के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। – मृणालिनी- संयोजक तेलुगु भाषा- हैदराबाद"